सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय

क वता- साँप

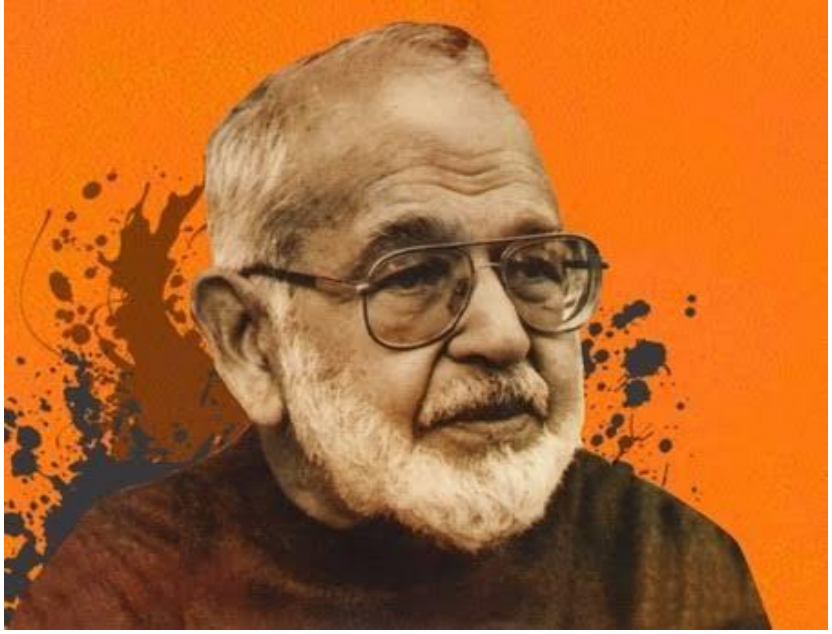

सच्चिदानंद हीरानंद
वात्स्यायन
अज्ञेय
क वता- साँप

साँप !
तुम सभ्य तो हुए नहीं
नगर में बसना
भी तुम्हें नहीं आया ।
एक बात पूछूं (उत्तर दोगे?)
तब कैसे सीखा डँसना –
वष कहाँ से पाया?